

.. श्री लक्ष्मीची आवती ..

दितिजा दितिजे यङ्गे पयक्षागार मायिला
 किंशु प्रक्षणे तेका कृत्ने भाहित्य तुला
 त्यजुनि क्षुक्षुक मानव ऋषिमंडल क्षकला
 श्रीपिण्णूच्या कंठी घालिक्षि तू माला ...1

जय जय लक्ष्मी फल क्षुक्षुक फल तय भजनाते
 पीठा निक्षुनि कक्षण करि भर्जजनाते ...४०

तत्पदि पुंडरिकाक्षतय पंढरपुदी काहे
 कृत्वान्निनध कक्षांगी अक्षक्षी तू माये
 क्षन्मुक्ख कान्होपात्रा हेमाशवत्याहे
 त्वत्पूजकाकडे कथि काळ न पाहे ...जय जय लक्ष्मी...२

द्यावे भर्ज जनाला क्षौळ्य जगन्माते
 निर्ढाळावे जननी भर्जिष्टाने
 तू मातोश्री तुजपिण प्रार्थ कवणाते
 कक्षणा करिते श्रीहरि कान्ते किंशुक्षुते ...जय जय लक्ष्मी...३

निज भक्ताला आयुष्य धेनु धन धान्य
 क्षत्री पुत्र पौत्र ढेठनि करिक्षी जगमान्य
 किंषिका वरण हयशय ढेक्षिल क्षन्मान्य
 ढातृत्व तुझे तुज भग कोण आजे आन्य ... जय जय लक्ष्मी...४

भर्जहि ढुळ्के ढाकती ढामती त्वन्नाभक्षमणे
 याक्षतय पिधिकह क्षूक्षवर पूजिति क्षन्माने
 तुक्षिया मंडपि होति द्विज भोजन भजने
 यद्वावन्नात्मज भावे त्वत्पदि करि नमने ... जय जय लक्ष्मी...५

.. श्री लक्ष्मी करुति ..

महालक्ष्मी नमक्तुभ्यं नमक्तुभ्यं क्षुक्षेशवरि
 हरिप्रिये नमक्तुभ्यं नमक्तुभ्यं ढयानिधे